



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में भारतीय जीवन, मूल्य एवं राष्ट्रीय भावना विषय पर हुआ विशेष व्याख्यान
मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में लोकमंगल की भावना, मातृभूमि के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है : प्रो. नरेंद्र मिश्र
वर्धा, 4 अगस्त 2026: राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में लोकमंगल की भावना और मातृभूमि के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है। हिंदी कविता के इतिहास में उनका योगदान असाधारण है। उक्त विचार इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दिल्ली के हिंदी संकाय के प्रो. नरेंद्र मिश्र ने व्यक्त किये।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के छह वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा समागम 2026 के अंतर्गत जारी दिशा-निर्देशों के अनुपालन में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के



साहित्य विद्यापीठ के तत्वावधान में सोमवार, 03 अगस्त को महादेवी सभागार में 'मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में भारतीय जीवन मूल्य एवं राष्ट्रीय भावना' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने की।

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित काव्य पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए प्रोफेसर मिश्र ने कहा कि भारत-भारती में नारी सम्मान और स्वदेशी के प्रति प्रेम झलकता है। देश के प्रति अनुराग उनकी कविता के केंद्र में है। उन्होंने कविता के माध्यम से स्वाभिमान को

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



जागरूक करने का कार्य किया। उन्होंने कविता से भारत की जनता की अपेक्षा को आवाज दिया और उत्प्रेरण का कार्य किया। उनकी कविता ने किसानों का दर्द, भारतीय परंपरा और युग धर्म में सामंजस्य स्थापित करने का काम किया है।

कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रोफेसर कुमुद शर्मा ने कहा कि गुप्त के काव्य में पौराणिक कथा, उपनिषद, महाभारत और रामायण से लिए हुए जीवन प्रसंग होते हैं। वह परंपरा के उपादानों से वर्तमान का संदर्भ लेते हैं। उनके साहित्य में भारतीयता और राष्ट्रीय दायित्व का प्रदर्शन होता है। देश प्रेम की अटूट भावना उनके साहित्य का आधार है। गुप्त जी का साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ा है। वह भारतीय जनमानस में कर्तव्य बोध जगाने वाले कवि हैं। उनका साहित्य हमेशा प्रेरणा और वर्तमान चुनौतियों से निपटने का साहस भी देता रहेगा।

कार्यक्रम का स्वागत एवं प्रस्तावित वक्तव्य साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता, प्रोफेसर अवधेश कुमार ने दी। एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. रामानुज अस्थाना ने गुप्त के काव्य को लेकर कविता प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन हिंदी साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. रूपेश कुमार सिंह ने किया तथा भाषा विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का प्रारंभ मैथिलीशरण गुप्त के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलन एवं कुलगीत गायन से किया गया। इस अवसर पर शिक्षक शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

मैथिलीशरण गुप्त यांच्या काव्यातील भारतीय जीवनमूल्ये आणि राष्ट्रीय भावना विषयावर विशेष व्याख्यान
मैथिलीशरण गुप्त यांच्या काव्यात लोकमंगलाची भावना आणि मातृभूमीवरील प्रेम प्रकर्षाने व्यक्त होते : प्रो. नरेंद्र मिश्र

वर्धा, ४ ऑगस्ट २०२६ : राष्ट्रकवी मैथिलीशरण गुप्त यांच्या काव्यात लोकमंगलाची भावना, मातृभूमीप्रती निष्ठा आणि राष्ट्रीय चेतना प्रभावीपणे व्यक्त होते. हिंदी काव्यपरंपरेतील त्यांचे योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण आणि असामान्य आहे, असे प्रतिपादन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नवी दिल्ली येथील हिंदी विभागाचे प्रो. नरेंद्र मिश्र यांनी केले.

भारत सरकारच्या शिक्षण मंत्रालयामार्फत राष्ट्रीय शिक्षण धोरण-२०२० ला सहा वर्षे पूर्ण झाल्याच्या निमित्ताने आयोजित अखिल भारतीय शिक्षण समागम-२०२६ अंतर्गत जारी करण्यात आलेल्या मार्गदर्शक सूचनांच्या अनुषंगाने महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठाच्या साहित्य विद्यापीठातर्फे सोमवार, ३ ऑगस्ट रोजी महादेवी सभागृहात 'मैथिलीशरण गुप्त यांच्या काव्यातील भारतीय जीवनमूल्ये आणि राष्ट्रीय भावना' या विषयावर विशेष व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात आले. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी विश्वविद्यालयाच्या कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा होत्या.

मैथिलीशरण गुप्त यांच्या काव्यसृष्टीवर सविस्तर प्रकाश टाकताना प्रो. नरेंद्र मिश्र म्हणाले की, भारत-भारती या काव्यात स्त्री-सन्मान, स्वदेशीची भावना आणि राष्ट्रप्रेम प्रभावीपणे प्रतिबिंबित होते. देशाविषयीचा उत्कट अनुराग त्यांच्या कवितेचा केंद्रबिंदू आहे. आपल्या कवितांद्वारे त्यांनी भारतीय समाजात स्वाभिमान जागृत करण्याचे कार्य केले. भारतातील जनतेच्या अपेक्षांना त्यांनी काव्यरूपाने अभिव्यक्ती दिली आणि राष्ट्रीय प्रेरणा निर्माण केली. त्यांच्या कवितेत शेतकऱ्यांचे दुःख, भारतीय परंपरा आणि युगधर्म यांचा सुंदर समन्वय आढळतो.

अध्यक्षीय भाषणात कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा म्हणाल्या की, मैथिलीशरण गुप्त यांच्या काव्यात पुराणकथा, उपनिषदे, महाभारत आणि रामायण यांतील जीवनप्रसंगांचा प्रभाव दिसून येतो. त्यांनी भारतीय परंपरेतील मूल्यांचा आधार घेत वर्तमानाशी सुसंगत संदर्भ निर्माण केले. त्यांच्या साहित्यामध्ये भारतीयत्व, राष्ट्रीय कर्तव्यभावना आणि देशप्रेम यांचे प्रभावी दर्शन घडते. गुप्त यांचे साहित्य

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

 ज्ञान शांति मैत्री	महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) जनसंपर्क कार्यालय PUBLIC RELATIONS OFFICE	 आज़ादी का अमृत महोत्सव
---	--	--

भारतीय ज्ञानपरंपरेशी निगडित असून ते समाजात कर्तव्यबुद्धी जागृत करणारे आहे. त्यांचे साहित्य आजही प्रेरणादायी असून समकालीन आव्हानांना सामोरे जाण्याचे धैर्य प्रदान करणारे आहे.

कार्यक्रमाच्या प्रारंभी साहित्य विद्यापीठाचे अधिष्ठाता प्रो. अवधेश कुमार यांनी स्वागत व प्रास्ताविक केले. एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. रामानुज अस्थाना यांनी मैथिलीशरण गुप्त यांच्या काव्यावर आधारित कविता सादर केली. कार्यक्रमाचे संचालन हिंदी साहित्य विभागाचे सहायक प्रोफेसर डॉ. रूपेश कुमार सिंह यांनी केले, तर भाषा विद्यापीठाच्या अधिष्ठाता प्रो. प्रीती सागर यांनी आभार मानले. कार्यक्रमाची सुरुवात राष्ट्रकवी मैथिलीशरण गुप्त यांच्या प्रतिमेला पुष्पहार अर्पण, दीपप्रज्वलन आणि विश्वविद्यालयाच्या कुलगीताने झाली. या कार्यक्रमास विश्वविद्यालयातील शिक्षक, शोधार्थी आणि विद्यार्थी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.